दैनिक जागरण 07-04-2017

50 लाख टन चीनी का कम होगा उत्पादन

250 लाख टन चीनी की देश में हर साल जरुरत है

200 लाख टन चीनी उत्पादन की संभावना

70 लाख टन चीनी का देश में बफर स्टाक है

05 लाख टन चीनी का आयात किया जाएगा

» NSI में सूखे व कम पानी वाले गन्ने की वैरायटी पर सेमिनार

EXCLUSIVE

pradeep.tripathi@inext.co.in

KANPUR (6 April): इस साल देशवासियों की चाय में 'चीनी कम' हो जाएगी. क्योंकि महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में बीते दो साल से चले आ रहे सूखे की वजह से देश में गन्ने का उत्पादन प्रभावित हो गया है. जिसका असर अब देखने को मिल रहा है. इस बार देश में चीनी की डिमांड के कम्पेरीजन में लगभग 50 लाख टन चीनी का प्रोडक्शन कम होगा. ये स्थिति ज्यादा परेशान करने वाली इसलिए भी है क्योंकि आकड़ों की माने तो देश में हर करीब तीन परसेंट चीनी की डिमांड बढ़ रही

है. यह जानकारी नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में आयोजित दो दिवसीय नेशनल सेमिनार में इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर ने दी. उन्होंने बताया कि चीनी का उत्पादन कम होने की वजह से सेंट्रल गवर्नमेंट ने करीब 5 लाख टन चीनी आयात करने का डिसीजन लिया है.

सेमिनार में डायरेक्टर प्रो. नरेन्द्र मोहन ने कहा कि अब हमें गन्ने की ऐसी वैरायटी पर फोकस करना होगा जिससे शुगर का परसेंट भी ज्यादा मिले और फसल का उत्पादन भी ज्यादा हो. कोशिश यह की जा रही है जो गन्ने की वैरायटी कम पानी में बेहतर उत्पादन दे सके उस पर फोकस करना चाहिए. देश में फूड हैबिट चेंज होने और पापुलेशन की बढ़ने की वजह से हर साल 3 परसेंट की दर से चीनी की डिमांड बढ़ रही है. देश में इस टाइम 70 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना की पैदावार हो रही है. इसे बढ़ाकर 100 टन प्रति हेक्टेयर करना होगा.

इन वैरायटी पर फोकस

तमिलनाडु के कोयंबटूर में डेवलप की गई गन्ने चार की वैरायटी से किसान इस समस्या से निजात पा सकते है. फील्ड ट्रायल में यह वैरायटी सूखे से लड़ने में और कम पानी में बेहतर उत्पादन दिया है. किसानो को सीओ 0238, सीओजे 8 5, सीओजे 88 और सीओ 88230 की वैरायटी अपने खेत में यूज करेंगे तो अच्छी फसल के साथ अच्छा उत्पादन हासिल करेंगे. सेमिनार में डॉ सुशील, डॉ एके सिंह आदि मौजूद रहे.

दैनिक जागरण 07-04-2017

गन्ने के साथ उगाएं दाल सब्जी व आलू की फसल

जागरण संवाददाता, कानपुर : किसानों की आमदनी दोगुनी करने के लिए इंटर क्रॉपिंग एक सशक्त माध्यम हो सकती है। तकनीकी व कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक किसी भी एक फसल के साथ बीच में खाली पड़ी जगह पर अन्य फसलों की बुवाई करके मुनाफे की फसलें काटी जा सकती हैं।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान व चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में गुरुवार को आयोजित सेमिनार में निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने इंटर क्रॉपिंग को समय की मांग बताया। उन्होंने कहा कि गन्ने के साथ किसान अपने खेतों में सभी प्रकार की दालें, सब्जियां, आलू व तिलहनी फसलों की बुवाई कर सकता है। ऐसी 14 फसलें हैं जिनकी बुवाई गन्ने की फसल के साथ की जा सकती है। मुनाफे में भी 40 फीसद का इजाफा होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीएसए कुलपति प्रो. सुशील सोलोमन रहे।

इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम से करें कीट व रोगों का सफाया : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डा. एसएन सुशील ने बताया कि

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित सेमिनार को संबोधित करते भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ से आए प्रो. एके सिंह

कीट व रोग गन्ने की 20 फीसद फसल को नष्ट कर देते हैं। इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम से उन्हें बचाया जा सकता है। इसी संस्थान से आए डा. एके सिंह ने जल्दी, बीच में व देर से बोई जाने वाली गन्ने की प्रजातियों के बारे में बताया। इंटरनेशनल कमीशन फॉर यूनीफार्म मैथड्स ऑफ शुगर एनालिसिस की वाइस प्रेसीडेंट डा. वसुधा केसकर ने गन्ने की फसल काटने के बाद उनमें रोग व कीट से बचाव के बारे में जानकारी दी। सीएसए से आए डा. एके त्रिपाठी ने इंटर क्रॉपिंग को जरूरी बताया।

हिन्दुस्तान 07-04-2017

बहुफसली व्यवस्था से किसानों को लाभ

कानपुर | कार्यालय संवाददाता

गन्ने की उत्पादकता देश में 68 टन प्रति हेक्टेअर है। जो विदेशों की तुलना में काफी कम है। फसल कम होने से न सिर्फ किसान आर्थिक रूप से कमजोर हो रहे हैं खाद्य प्रसंस्करण इकाईयों के लिए कच्चे माल की समस्या बढ़ रही है। किसानों को बहुफसली व्यवस्था के तहत उत्पादन करना चाहिए।

ये बातें राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कही। गुरुवार को चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि व राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय इंटीग्रेटेड एप्रोच फॉर इनहैंचिंग सुगरकेन एंड ओवरआल फार्म प्रोडक्टीविटी बाई एडाप्टिंग इंप्रूवड कलटीवेशन एंड एनालिटिकल प्रैक्टिस था। सेमिनार का उद्घाटन चन्द्रशेखर आजाद कृषि विवि के कुलपति डॉ. सुशील सोलोमन ने किया। उन्होंने कहा कि जिस गति से देश की जनसंख्या बढ़ रही है इससे यह तय है कि भविष्य में खाद्यान्न को लेकर संकट पैदा हो सकता है। तकनीकी सत्र में चार अनुसंधान पत्र प्रस्तुत किए गए। पहला पत्र सीएसए के डॉ. करम हुसैन ने एग्रोनोमिक प्रैक्टिस फॉर प्रोडक्टीविटी एंड प्रोफिटेबिल्टी ऑफ सुगरकेन क्राप विषय पर प्रस्तुत किया। दूसरा पत्र लखनऊ से आए भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एसएन सुशील ने ह्यबायो-इनटेनसिव इंटीग्रेटेड पेस्ट मैनेजमेंट इन सुगरकेन फॉर हायर प्रोडक्शन एंड प्रोडक्टीविटी इन इंडिया विषय पर प्रस्तुत किया। तीसरा पत्र सीएसए के डॉ. एके त्रिपाठी ने सुगरकेन बेस्ड इंटर-क्रापिंग सिस्टमः डबलिंग फॉर्मर इनकम इन इंडिया विषय पर प्रस्तुत किया। चौथा पत्र लखनऊ से आए डॉ. एके सिंह ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में प्रदेश के 100 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि व राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की ओर से गुरुवार को दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। • हिन्दुस्तान

सूखे ने कम किया उत्पादन

कानपुर। उत्तर प्रदेश के अलावा गन्ना उत्पादन के लिए तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र है। पिछली बार तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक में सूखा पड़ा था। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने बताया कि देश में 50 लाख हेक्टेयर जमीन पर गन्ना उत्पादन होता है। प्रति हेक्टेयर 68 टन गन्ना उत्पादन होता है। हर साल 3000 से 3500 लाख टन गन्ना होता है मगर इस बार 2500 टन गन्ना उत्पादन हुआ है। अब कम पानी वाली फसलें तैयार होंगी।

अमर उजाला My City 07-04-2017

गन्ने का उत्पादन बढ़ाने को अपनाएं आधुनिक तकनीक

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार की शुरुआत

अमर उजाला ब्यूरो

कानपुर।

भारत में गन्ने की उत्पादकता में भारी कमी देखने को मिली है। हमारे यहां केवल 68 क्विंटल प्रति हेक्टेयर का उत्पादन है जो कि विदेशों की तुलना में काफी कम है। यह जानकारी बृहस्पतिवार को नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर प्रो. नरेंद्र मोहन ने दी। वे एनएसआई और चंद्रशेखर आजाद (सीएसए) कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने के लिए किसानों को आधुनिक तकनीकों को प्रयोग में लाना होगा। यही नहीं खेती के दौरान सिंचाई प्रबंधन, फसलों की कटाई व उनके पोषक तत्वों का ख्याल भी रखना होगा। सीएसए के कुलपति प्रो. सुशील सोलोमन ने भारत में बढ़ती जनसंख्या के अनुसार खाद्यान्न के उत्पादन पर जोर दिया। बोले, उन्होंने देश में अनाज, तिलहन फसलें और चीनी की कमी को भी देखा है। इसलिए खाद्यान्नों की मांग को पूरा करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में मृदा प्रबंधन से लेकर सिंचाई और कटाई प्रबंधन की आधुनिकतम वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए। इस दौरान डॉ. करम हुसैन, प्रो. एग्रोनामी, डॉ. एसएन सुशील, डॉ. एके त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

निदेशक नरेंद्र मोहन ने गन्ने की उत्पादकता पर रखे विचार।